Animals and Humans

बंदर और इंसान

Surabhi Shukla

www.genderdiversityandschools.in

बंदर और इंसान

''राजू, उठो! सवेरा हो गया, स्कूल नहीं जाना?'' माँ की आवाज़ उपर की टहनी से पट्टियों को चीरती हुई नीचे की ओर पहुँची। राजू उठ तो गया था पर आज उसे स्कूल जाने का बिल्कुल मन न था। आज स्कूल में स्पोर्ट्स पीरियड होता था और राजू को फुटबॉल खेलना बिल्कुल पसंद न था। इस वजह से बाकी सभी बंदर उसका बहुत मज़ाक उड़ाते थे। स्पोर्ट्स के मास्टर, चीता सर भी राजू को चैन से नहीं रहने देते थे। ''अरे राजू? फुटबॉल नहीं खेलोगे? असली बंदर फुटबॉल खेलते हैं। चलो, इस तरह बंदरियों जैसा व्यवहार मत करो। खड़े हो जाओ मैदान में।'' ''बंदर होने के लिए फुटबॉल खेलना ज़रूरी क्यूँ है? मुझे बंदरियों के साथ बैठ कर बातें करना ज्यादा पसंद है। मुझे फुटबॉल नहीं खेलना। क्या असली बंदर सच में फुटबॉल खेलते हैं ...'' राजू इन ख़यालों में खोया ही था की माँ ने फिर से आवाज़ लगाई, ''राजू! जल्दी करो!''

सच तो यह था की राजू काफ़ी दिनों से परेशान था। उसके माता पिता नागराज जंगल में सबसे बुद्धिमान एवं आदरणीय थे। जंगल में सब उन्हें बहुत खुले विचारों वाले और प्रगतिशील समझते थे। परंतु, राजू अपने माता पिता से एक ज़रूरी बात नहीं कर पा रहा था। राजू को स्कूल जाना बिल्कुल पसंद न था। सब उसे बंदरिया बंदरिया कह कर चिढ़ाते थे। ''बंदरिया नाच, बंदरिया नाच,'' कह कभी उसे बेवजह छूते, कभी उसकी पीठ सहलाते और कभी उसे बाथरूम में सताते, ''तू बंदर है भी? देखें तो!'' वो इन घटनाओं से काफ़ी परेशान था। पर इस तरह की बातें उसके घर नहीं होती थीं।

आजकल तो स्टूडेंट्स ने एक नया शब्द सीख लिया था - GAY (गे)। राजू ने बचपन में पढ़ा था कि गे का मतलब होता है खुश रहना। पर जिस तरह अन्य स्टूडेंट्स उसे गे पुकारते थे, हमेशा खुश रहने वाला राजू मानो खुश रहना ही भूल गया हो। उसके दोस्त भी अब उसके साथ खेलना पसंद नहीं करते थे। जो बचे खुचे दोस्त थे वो राजू को कभी चलना सिखाते तो कभी बोलना, ''ये देख, बंदर की तरह चला कर, छाती चौड़ी कर के। फिल्मों में हीरो को नहीं देखा? शेर की तरह दहाड़ा कर, चिड़िया की तरह चहका मत कर।'' क्या राजू सच में चिड़िया की तरह चहकता था? और यह बंदर जैसा चलना क्या होता है। चलना तो चलना होता है, है ना? खैर, राजू ने शीशे के सामने दहाड़ने के लिए अपना मुँह खोला और वो अभी दहाड़ने ही वाला था कि फिर से माँ ने आवाज़ लगाई, ''राजू! अगर बस छूट गयी तो मैं स्कूल छोड़ने नहीं जाऊँगी!'' स्कूल जाने के नाम से राजू का दिल ज़ोर से धड़क रहा था पर अब उसके पास कोई रास्ता न था। पिछले हफ्ते वह दो बार बीमारी का बहाना कर के स्कूल से छुट्टी ले चुका था। इस हफ्ते बहाना न चलेगा। झक्क मार के राजू तैयार हो गया।

स्कूल में राजू को नबीला मिली। नागराज जंगल सर्पों से भरा था-- ध्यान नहीं दिया तो सर्पदंश का डर था-- नबीला इस बात से सदा ही बेफ़िक्र रहती थी। नबीला के छोटे छोटे बाल थे, वो फुटबॉल खेलती थी और उसे अपने बाल, हाथ और मुँह सवारने में कोई दिलचस्पी न थी। सब लोग डरते थे उससे और वो मस्ती में घूमती और अपना पूरा समय रिया के संग बिताती थी। ''रिया!'' नबीला ने मन ही मन कहा ''कितनी अच्छी है वो, काश मैं अपना पूरा दिन रिया के साथ ही बिता सकूँ। आज स्पोर्ट्स पीरियड में मैं उसे यह बता दूँगी की वो मुझे अच्छी लगती है।''

नबीला ने जब रिया को बताया कि वह उसे अच्छी लगती है तो रिया ने तुरंत उत्तर दिया, ''हाँ, तुम भी मुझे अच्छी लगती हो, तुम मेरी सबसे अच्छी सहेली हो।'' ''नहीं रिया, तुम समझी नहीं... I *like* like you!'' ''ओह!'' रिया ने कहा और वो ग्राउंड से भाग गयी। नबीला समझने की कोशिश कर ही रही थी कि क्या हुआ कि इतने में मगरमच्छ मैंम् का बुलावा आया। मगरमच्छ मैंम् स्कूल की काउन्सिलर थी। कहने को तो वो संवेदनशील थीं पर उनपर भरोसा करना बड़ा ही मुश्किल था। ऑफिस पहुँची तो मैंम् ने उसे बहुत डांटा, ''तुमने रिया को क्या कहा? जानती नहीं यह ग़लत है? तुम्हें डॉक्टर की ज़रूरत है, फिर से ऐसा किया तो तुम्हारी मम्मी डैडी को बता दूँगी।'' नबीला को काटो तो खून नहीं। उसने ऐसा क्या ग़लत किया था? नबीला काउन्सिलर के कमरे से निकली तो सभी सहपाठी उसे अजीब तरह से देख रहे थे। ''क्या उन्हें पता चल गया, क्या रिया ने सबको बताया, या फिर काउन्सिलर मैंम् ने...?''

यह सोचते सोचते नबीला कक्षा में वापस पहुँची। अगला पीरियड जीव विज्ञान का था और आज का लेसन ह्यूमन रिप्रोडक्शन पर था। ''ह्यूमन रिप्रोडक्शन!'' यह सुनकर चीकू बड़ा खुश हुआ। कई दिनों से चीकू के मन में कई सवाल उठ रहे थे। चीकू था तो बंदर परंतु उसे एक बंदरिया जैसा महसूस होता था। उसे बंदरियों की तरह सजने में और बंदरियों की तरह पोशाक पहनने में बहुत मज़ा आता था। उसने फिल्मों में माधुरी दीक्षित को देखा था और वह बिल्कुल उनकी तरह बनना चाहता था। वह अपना नाम भी बदलना चाहता था-- चाँदनी! है न बिल्कुल हेरोइन जैसा नाम? परंतु स्कूल में उसे समझने वाला कोई न था। सब उसे ''छक्का'' कह कर पुकारते थे। कई बार उसने टीचर से शिकायत करने की कोशिश भी की पर कुछ ही टीचर थे जिन्होनें उसकी मदद की। टीचर अक्सर कुछ कह कर बात को टाल देते या तो उसी को दोषी मानते, ''तुम अपने आप को ठीक कर लो, यह सब खुद ही बंद हो जाएगा।'' घर पर भी वो किसी को कुछ नहीं कह पाती। कम से कम स्कूल के नाटक और कल्चरल प्रोग्राम में बंदरियों वाला पोशाक पहनने का मौका मिल जाता था। घर पर बताया तो वह भी बंद हो जाएगा।

आज जीव विज्ञान की क्लास से उसे बड़ी उमीद थी। जब वह पाचवीं में थी तो टीचर ने क्लास के सभी छात्रों को क्लास के बाहर खेलने भेजा था और बंदरियों से बड़ी संगीनता से कुछ बात की थी। जाने वह क्या बातें थीं पर सभी छात्राएँ काफ़ी स्ट्रेस्ड लग रही थीं। आज तक किसी ने उनके स्कूल में यह बातें नहीं कीं

कि, ''... अब तुम लोग १४ साल के हो-- तुम्हारे शरीर में परिवर्तन हो रहा है, नयी नयी भावनाओं से तुम्हारा सामना हो रहा होगा, हो सकता है कि तुम्हें कोई पसंद आने लगा हो...''। किसी से आज तक ऐसी कोई बात न की थी।

पर आज वो मौका आ गया था। ''ह्यूमन रिप्रोडक्शन के बारे में समझाते वक़्त मैंम् बदलते शरीर एवं भावनाओं के बारे में कुछ तो कहेंगीं,'' चाँदनी ने सोचा। ख्याली पुलाव पकाना शायद इसी को कहते हैं। जीव विज्ञान टीचर क्लास में आईं और स्टूडेंट्स से कहा, ''आज का लेसन सब अपने अपने मन में पढ़ेंगे। आप पढ़िये, मैं आती हूँ।'' यह कह कर टीचर क्लास से बाहर चली गयीं और फिर क्लास ख़त्म होने तक वापस ही नहीं आईं।

हताश हो कर राजू, नबीला और चाँदनी अपने अपने घर पहुँचे। स्कूल का एक और दिन ख़त्म हो गया और उनकी समस्या का कोई हल नहीं निकला। स्कूल से उन्हें नफ़रत सी होने लगी थी, स्कूल जाने का मन नहीं करता, पढ़ाई में मन नहीं लगता और सबसे कटा कटा, अलग अलग सा महसूस होता था। कभी कभी अजीब अजीब ख्याल आते, ''यह सब ख़त्म हो जाए तो अच्छा है...''

वो चाहे कितने ही नंबर न लायें, कितने ही होनहार हों, उनके सहपाठियों का दुर्व्यवहार ख़त्म ही नहीं होता था। ''क्या हम आदर के हक़दार नहीं? और फिर पढ़ाई में कमज़ोर बच्चों को भी तो इज़्ज़त मिलती है।'' उनके मन में कितने सवाल थे। कुछ दिन पहले जंगल में कुछ पर्यटक आए थे। उन्हें जब भी किसी प्रश्न का उत्तर चाहिए होता, वह फोन निकालते, उसमें इंटरनेट ऑन करते और अपने सारे उत्तर पा जाते। इंटरनेट पर गूगल नामक एक विचित्र वस्तु थी जिससे विचार विमर्श करने पर तुरंत ही सारे उत्तरों की प्राप्ति हो जाती थी। ''परंतु, जंगल में गूगल कहाँ प्राप्त होगा?...'' यह सोचते सोचते वह तीनों बच्चे गहरी नींद सो गये।

उस रात उन तीनों ने एक सपना देखा। उन्होनें देखा कि वे इंसान बन गये हैं। उन्होनें देखा कि स्कूल में उन्हें कोई अटपटा नहीं मानता; राजू के चलने और बोलने का ढंग अब हँसी का पात्र नहीं है, नबीला और रिया अब भी दोस्त हैं। रिया नबीला को पसंद तो नहीं करती पर उसे यह बात अटपटी नहीं लगती है कि नबीला उसे पसंद करती है-- आख़िर रिया भी तो रिंकू को पसंद करती है। इस स्कूल की सारी टीचर्स सच में संवेदनशील हैं। चीकू का नाम भी रिपोर्ट कार्ड में बदल कर चाँदनी हो गया है और अब सब उसे चाँदनी के नाम से ही पुकारते हैं। यहाँ सेक्स और सेक्शूऐलटी के बारे में खुले तौर पे बातें होती हैं। स्टूडेंट्स को बताया जाता है कि यह बुरी चीज़ नहीं है। यह भी जीवन का एक पहलू है और ज़िम्मेदारी पूर्वक इस पहलू को समझने की कोशिश करनी चाहिए। सबको अपनी ज़िंदगी जीने की पूरी आज़ादी है। ''राजू! उठो स्कूल जाना है!'' फिर वही माँ की आवाज़। राजू उठ गया। नबीला और चाँदनी भी अपने अपने घर पर उठ गए।

उस दिन क्या जोश था उनमें। इस सपने ने कितनी उम्मीद दी थी उनको। उन्होनें मन ही मन सोचा, ''कितना अच्छा होता कि हम इंसान होते। इंसान कितने समझदार और खुले दिमाग़ के हैं। कितने संवेदनशील हैं वो। आख़िर वो जानवर नहीं!''

समाप्त